शेख़ फ़रीद – सबद १२९

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥१२७॥

सार: विनम्रता स्वयं की कठोर सीमाओं को पिघला देती है जिससे करुणा और समझ का विकास होता है। क्षमा उस बोझ को हल्का कर देती है जो हमें पीड़ा और प्रतिक्रियात्मक व्यवहारों से बांधे रखता है। जब हम विनम्रता के साथ संवाद करते हैं तब यह हमारी आंतरिक परिपक्वता को दर्शाता है क्योंकि तब अहं को अपनी उपस्थिति जताने के लिए कठोरता का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं रह जाती। यह गुण केवल सद्गुणों तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि यह एकत्व से जुड़ाव की ओर बदलाव का संकेत देते हैं। इस प्रकार, ये सद्गुण आपसी सौहार्द का मार्ग प्रशस्त करते हैं क्योंकि इनके माध्यम से हमारा वास्तविक स्वरूप हमारी अंतर्निहित एकता के साथ मिल जाता है।

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥
विनम्रता वह शब्द है, क्षमा वह गुण है और मीठी वाणी अनमोल शिक्षा है। यह दृष्टिकोण में ऐसा बदलाव दर्शाता है जो अहं को कम करता है और सौहार्दपूर्ण परिणामों को सुनिश्चित करता है।

ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥१२७॥
हे साथियों, इन तीनों को अपने पहनावे के रूप में धारण करने से, आंतरिक स्वत्व पर नियंत्रण स्थापित हो जाता है। यह दृष्टिकोण हमारे मूल गुणों की एकता को समाहित करता है और हमारी कमज़ोरियों को हमारी ताक़त में बदल देता है। (१२७)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद हमें स्मरण कराते हैं कि जब हम सचेत रूप से अपनी आंतरिक सत्ता से जुड़ते हैं तब हम आत्म-खोज और विकास की एक अद्भुत यात्रा पर निकल पड़ते हैं। यह शक्तिशाली जुड़ाव

हमें अपने मूल गुणों को एकीकृत करने में सक्षम बनाता है और हमारी कथित कमज़ोरियों को ऐसी ताक़तों में बदल देता है जो हमारी क्षमताओं को बढ़ाती हैं और हमारी पूर्णता की खोज को समृद्ध करती हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com